कंचना कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

बी०ए० स्नातक, हिन्दी प्रतिष्ठा
पार्ट III

हिन्दी के बोलचाल की भाषा और प्रयोजन मूलक हिन्दी में अन्तर।

बोलचाल की भाषा — बोलचाल की भाषा भाषा का वह रूप है, जो बोल-चाल की भाषा होती है यह भाषा लिखित भाषा से भिन्न होती है। इसमें भाषा की सरल शब्दों का उपयोग होता है। इसमें व्याकरण के नियमों का ध्यान नहीं रखा जाता है और न ही वाक्य विन्यास की ओर गम्भीरता रखी जाती है। इसमें स्थानीय एवं आंचलिक शब्दों का भी प्रयोग नि:संकोच रूप से किया जा सकता है। बोल-चाल की भाषा एक विशिष्ट गुण यह होती है कि इसकी अभिव्यक्ति क्षमता प्राय: अधिक होती है।

प्रयोजन मूलक हिन्दी — प्रयोजन मूलक हिन्दी अंग्रेजी शब्द 'फंक्शनल हिन्दी' का पर्याय है। शब्दार्थ की हिन्दी की दृष्टि से प्रयोजनमूलक हिन्दी का अर्थ है — ऐसी विशेष हिन्दी जिसका उपयोग किसी प्रयोजन के लिए किया जाए। इसे कामकाजी हिन्दी या व्यवहारिक हिन्दी भी कहा जा सकता है डा॰ रमा प्रसन्न नायक इसे प्रयोजनमूलक हिन्दी की अपेक्षा

व्यावहारिक हिन्दी कहना ज्यादा उचित समझो है। प्रयोजनमूलक हिन्दी लगता है जैसे कोई ऐसी हिन्दी है जिसे निष्प्रयोजनपरक कहा जा सका है इस संदर्भ मे व्यवहारिक शब्द का प्रयोग अधिक उपयुक्त है। डॉ० नरेन्द्र का कहना है – "वस्तुत: प्रयोजनमूलक हिन्दी का विपरित अगर कोई हिन्दी है तो वह निष्प्रयोजनमूलक नहीं वरन् आनन्दमूलक हिन्दी है। आनन्द व्यक्ति सापेक्ष है और प्रयोजन समाज सापेक्ष। आनन्द स्वकेन्द्रित होता है और प्रयोजन समाज की ओर इशारा करता है हम आनन्दमूल हिन्दी के विरोधी नहीं है इसलिए आनन्द मूल साहित्य के हम भी हिमायती है। पर सामाजिक आवश्यकताओं विरोधी है इसलिए को भी अपनी नजर से ओझल नहीं करना चाहते। डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा प्रयोजनमूलक विशेषण में निहित संकेत को स्पष्ट करते हुए निष्प्रयोजन हिन्दी की कल्पना को अस्वीकार कर दिया है, "निष्प्रयोजन हिन्दी कोई चिज नहीं लेकिन प्रयोजनमूलक विशेषण उसके व्यवहारिक पक्ष को अधिक उजागर करने के लिए प्रस्तुत किया।

© Marvel
Scanned with CamScanner